# ४. ऐच्छिक उपक्रम

## १. क्षेत्र : अनाज

### १.१ घर के पिछवाड़े में बागबानी

पिछवाड़ेवाली बाग का खाका किस प्रकार खींचा जाता है; यह समझना ।

**पिछवाड़ी बाग :**

घर के आसपास और पीछे खाली और खुली जगह होती है और इस खाली जगह में साग-सब्जियाँ उगाई जाती हैं । उसे पिछवाड़ी बाग कहते हैं । इसमें धनिया, मूली, मिर्च, मेथी, बैंगन, तुरई, घियातुरई, करेला, भिंडी, ग्वारफली, अदरक, अजवाइन आदि सब्जियाँ उगाई जाती हैं । उपलब्ध भूमि के अनुसार बाग की रचना की जाती है । इसके लिए क्यारियाँ बनानी पड़ती हैं । जैसे- समतल क्यारी, कूंड क्यारी, उभार क्यारी ।

**मेरी कृति**

(१) खाली खोखा, नारियल की करोटियाँ, कागज के गिलास आदि में पौधे लगाओ ।

(२) अपनी पसंद की सब्जियों की सूची बनाओ ।

◆ सब्जियाँ उगाने के लिए अलग-अलग प्रकार की क्यारियाँ बनानी पड़ती हैं; इसकी जानकारी दें ।

## मेरी कृति

**चलो... खेल खेलेंगे ।**

**इस वर्गपहेली में सब्जियों के नाम हैं; उन्हें ढूँढ़ो ।**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ब | श | तु | र | ई |
| पा | ल | क | ख | लौ |
| बैं | ग | न | रे | की |
| च | म | न | गा | ला |
| आ | लू | ट | ज | से |
| ट | मा | ट | र | म |

.............................................. ..............................................

.............................................. ..............................................

.............................................. ..............................................

.............................................. ..............................................

**चित्रवाचन**

◆ अपने परिसर में किसी पिछवाड़ी बाग देखने जाएँ और बाग की रचना समझाएँ ।

## १.२ गमलों में पौधे लगाना

**गमलों में पौधे लगाने की प्राथमिक जानकारी प्राप्त करना ।**

गमलों के आकारों के अनुसार पौधों की रोपाई की जाती है । गमलों में लिली, डेलिया, गेंदा, गुलदाउदी, अस्टर, मोगरा जैसे फूलों के पौधों की रोपाई की जा सकती है । इन पौधों की रोपाई करने से पूर्व गमलों में खाद मिली मिट्टी भरनी पड़ती है ।

पौधों को बढ़ने के लिए बारीक अन्नपदार्थों का मिश्रण गमलों में डालना पड़ता है । इस मिश्रण को खाद कहते हैं । खाद के दो प्रकार होते हैं ।

(१) जैविक खाद

(२) रासायनिक खाद

**गमलों के पौधों में पानी देना**

गमलें में पौधा लगाने के बाद तुरंत उसे पानी देना पड़ता है । उसके बाद उस गमले को छाँव में रखना होता है । पौधा हरा-भरा और लहलहाता होने के पश्चात वह गमला सूर्यप्रकाश में रखना पड़ता है ।

अब गमले के पौधे को हजारे से पानी दें । गमले के आकार के अनुसार आवश्यक उतना ही पानी दें । पानी अधिक दिए जाने पर पौधे की जड़ें फूल जाती हैं । गमले की मिट्टी यदि सूख जाती है तो पौधे में पानी दें । पौधा लगाने के लिए मिट्टी, सीमेंट से बने गमलों का उपयोग किया जाता है । मिट्टी से बने गमले पौधों की वृद्धि के लिए उत्तम होते हैं । गमलों के तल में छेद होना आवश्यक होता है । इससे पौधे में यदि पानी अधिक दिया जाता है तो पानी छेद द्वारा बाहर निकल जाता है और पौधे की जड़ों को हवा प्राप्त होती है । वर्ष में एक बार गमलों को बाहर से साफ करना चाहिए ।

◆ अपने परिसर में किसी बगीचे में जाएँ और गमलों की जानकारी दें ।

## १.३ फल प्रक्रिया

### फल वृक्षों की जानकारी

फलों के वृक्ष अथवा पेड़ छोटे भी होते हैं और बड़े भी होते हैं । आम, कटहल और जामुन जैसे फलों के वृक्ष बड़े होते हैं तो केला, पपीता, चीकू जैसे फलों के पेड़ मँझोले कद के होते हैं । अंगूर की बेलें होती हैं ।

केला

**केले** के पेड़ का तना फुसफुसा, मृदु और मोटा होता है । तने का रंग हल्का हरा होता है । पत्ते लंबे और चौड़े होते हैं । केलों का घौद अर्थात गुच्छा लगने से पहले केले का फूल निकलता है । उसके पश्चात उस फूल से धीरे-धीरे केले उत्पन्न होते हैं ।

आम

**आम** का फल सभी को बहुत भाता है । आम के पेड़ का तना मोटा, कठोर और गाढ़े कत्थई रंग का होता है । पत्ते गहरे हरे रंग के होते हैं । निश्चित महीने में ही आम के पेड़ पर बौर लगते हैं । बौर से अँबिया और अँबिया पक जाने पर आम बनता है । आम के फल से विविध प्रकार के खाद्‌य पदार्थ तैयार किए जाते हैं ।

चीकू

**चीकू** का तना कत्थई रंग का और मजबूत होता है । पत्ते फीके हरे रंग के और मध्यम आकार के होते हैं । चीकू के फूल श्वेत रंग के होते हैं और फल कत्थई रंग का गोल अथवा लंबोतरा होता है । चीकू के अंदर काले रंग के बीज होते हैं । चीकू का उपयोग खाने और कई खाद्‌य पदार्थ तैयार करने के लिए किया जाता है ।

### मेरी कृति

आम, केला और चीकू के चित्र बनाओ और उनमें रंग भरो ।

- विद्‌यार्थियों से अपने परिसर में फलों के बगीचे में जाकर विभिन्न फलों के वृक्षों का निरीक्षण करके जानकारी प्राप्त करने के लिए कहें । पके हुए सभी प्रकार के फलों को साफ धोकर खाने के लिए कहें ।

## १.४ मछली व्यवसाय

**मछली पकड़ने के बारे में प्राथमिक जानकारी प्राप्त करना ।**

**मछली व्यवसाय किसे कहते हैं?**

मनुष्य के पौष्टिक भोजन में मछली का समावेश होता है ।

बड़ी मछलियाँ समुद्र, नदी, जलाशय जैसे स्थानों में पाई जाती हैं; तथा छोटी मछलियाँ तालाब, नहर और झरना जैसे स्थानों में पाई जाती हैं । इनको पकड़ना ही मछली व्यवसाय कहलाता है

**मछलियाँ किस प्रकार पकड़ी जाती हैं?**

मछलियाँ पकड़ने की अनेक पद्धतियाँ हैं । समुद्र और बड़ी नदियों में बड़े आकार की मछलियाँ होती हैं । इन मछलियों को पकड़ने के लिए यांत्रिक साधनों तथा विभिन्न प्रकार के जालों का उपयोग किया जाता है । उनकी जानकारी हम अगली कक्षा में प्राप्त करेंगे ।

मछली पकड़ने की आसान और प्राथमिक पद्धति की जानकारी हम प्राप्त करेंगे ।

**(१) पानी में खड़े होकर मछली पकड़ना**

इस पद्धति में उथले पानी में खड़े होकर छोटी-छोटी मछलियाँ पकड़ी जाती हैं । यदि गहरा पानी हो तो कुछ लोग उसमें गोता लगाकर मछलियाँ पकड़ते हैं । छोटी मछलियाँ हाथ से ही पकड़ी जाती हैं ।

**(२) भाले द्वारा मछली पकड़ना**

हाथ में भाला लेकर मछली को जख्मी किया जाता है ।

**(३) काँटा अथवा कँटिया लगाकर मछली पकड़ना**

'काँटा' मछली पकड़ने का सीधा-सादा परंतु अत्यंत उपयोगी साधन है । इसका आकार अंग्रेजी 'J' जैसा होता है । उसकी एक नुकीली नोक होती है । उसमें मछली का मनपसंद खाद्य बाँधा जाता है । दूसरे छोर में डोर बाँधकर उसके ऊपरी

सिरे पर एक तरंड लगाया जाता है । काँटा पानी में डालने के बाद उसके छोर में लगे खाद्य को खाने का प्रयास जैसे ही मछली करने लगती है वैसेही ऊपरी सिरे पर लगा तरंड हिलने लगता है । उसी समय काँटा/कँटिया पकड़ा हुआ व्यक्ति झटका देकर बाँस ऊपर उठा लेता है । मछली के मुँह में काँटे की नुकीली नोक फँसी हुई होती है । मछली को नोक से अलग कर टोकरी में रखते हैं । पुनः काँटे में खाद्य लगाकर उसे पानी में डाला जाता है । इस प्रकार काँटा/कँटिया से मछली पकड़ी जाती है ।

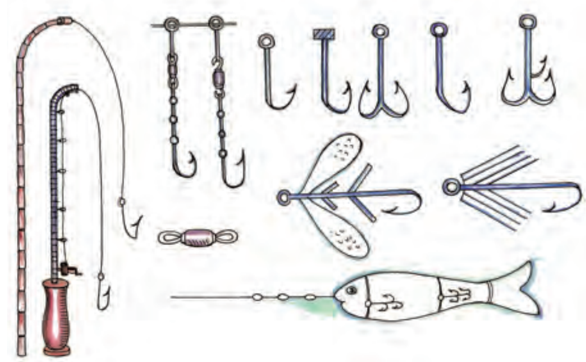

मछली पकड़ने का काँटा/कंटिया

### (४) पिंजरा अथवा झावा की सहायता से मछली पकड़ना

बाँस की पतली कमचियों अथवा पट्टियों से यह पिंजरा अथवा झावा बनाया जाता है । इस पिंजरे का आकार किसी मृदंग जैसा होता है । इसके अंदरवाले हिस्से में मछलियों के लिए खाद्य रखा जाता है । भीतरवाले हिस्से में ही बाँस की नुकीली नोकें लगी होती हैं । परिणाम यह होता है कि अंदर आई हुई मछलियाँ बाहर नहीं जा पातीं । वे अंदर ही फँस जाती है । इस प्रकार मछलियाँ पकड़ने की ये चार आसान और प्राथमिक पद्धतियाँ हैं । नदी किनारे रहनेवाले लोगों को इन पद्धतियों की जानकारी होती है ।

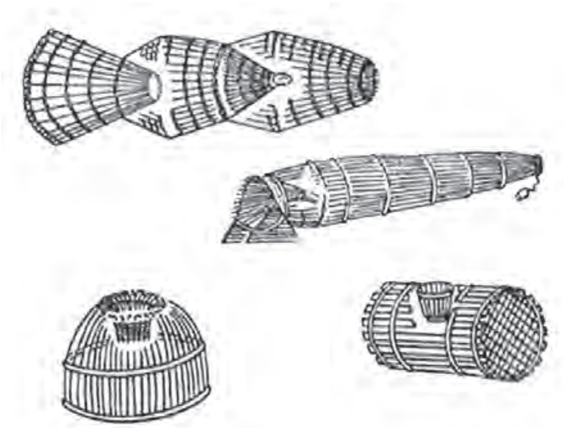

बाँस की कमचियों से बना पिंजरा/झावा

## मेरी कृति

(१) मछली पकड़ने के काँटे/कँटिये की प्रतिकृति तैयार करो ।
(२) मछली पकड़ने के पिंजरे का चित्र बनाओ ।
(३) संभव हो तो बुजुर्ग व्यक्ति के साथ जाकर प्रत्यक्ष मछली पकड़ने का कार्य देखो ।

◆ विद्यार्थियों से अपने परिसर के मछली बाजार में जाकर विभिन्न मछलियों का निरीक्षण कर जानकारी प्राप्त करने के लिए कहें ।

# २. क्षेत्र : कपड़ा

## २.१ कपड़ा बनाना

### घटक – १ : तकली और पूनी का प्रत्यक्ष उपयोग करना

**मैं तकली बोल रही हूँ ।**

बच्चो ! देखा क्या मुझे ? मैं हूँ तकली । क्या कहते हो? तुम्हें नहीं पता... तकली कैसी होती है? अरे भाई ! इसीलिए मैं अपनी पहचान करा देती हूँ । तो मैं हूँ तकली ।

कपास से कपड़ा बनता है; यह तो तुम जानते ही हो लेकिन कपड़ा बनाने से पहले कपास से सूत कातना पड़ता है । कपास से सूत कातने के कार्य को 'सूतकताई' कहते हैं । इस सूतकताई के कार्य का पहला साधन मैं हूँ अर्थात तकली !

क्या कहा ? यह काम तो यंत्र करते हैं ? तुम्हारी बात सही है परंतु यंत्र का आविष्कार होने से पहले यह काम मेरी मदद से ही किया जाता था । इसके बाद चरखे का आविष्कार हुआ । तकली और चरखे की सहायता से घर–घर में सूतकताई की जाती थी और हथकरघे पर कपड़ा बुना जाता था । आज भी यह काम कुछ घरों में किया जाता है ।

बच्चो! मैं कोई यंत्र नहीं हूँ । मेरी बनावट बहुत ही सीधी–सादी है । डंडी और चकती ये मेरे दो भाग हैं । यह डंडी इस्पात की होती है । वह अगरबत्ती जैसी मोटी होती है और उसकी लंबाई १८ सेंमी होती है । डंडी के ऊपर का छोर चपटा होता है । उसमें दरार होती है । उस दरार को 'नाक' कहते हैं । डंडी के निचले हिस्से से लगभग एक इंच ऊपर पीतल की एक चकती लगी होती है ।

◆ प्रत्यक्ष तकली अथवा तकली का चित्र दिखाकर निरीक्षण करने के लिए कहें । ◆ सूतकताई के विषय में जानकारी बताएँ ।

मेरा निचला सिरा नुकीला होता है । उसे 'अनी' कहते हैं ।

**तो इस तरह हूँ मैं तकली !**

क्या कहा? सूत कातने के लिए कपास की आवश्यकता होती है । कपास कहाँ है? इसका मतलब तुम बहुत बुद्धिमान हो । अरे, पिछली कक्षा में तो तुमने कपास साफ किया था न । उस कपास को घुनकर उसकी ठोस और मोटी बत्ती जैसी ६-७ इंच लंबी नली बताई जाती है । उस नली को 'पूनी' कहते हैं ।

पूनी

पूनी और मैं यानी तकली, हम दोनों मिलकर सूतकताई करते हैं । क्या कहा? तुम हमें छूना चाहते हो? बिलकुल... देखो तो छूकर...

लेकिन देखते समय मेरी लंबाई का मापन करो । यह देखो कि चकती का आकार कितना बड़ा है । यह भी देखो कि पूनी कितनी ठोस है । और हाँ ! मेरी नुकीली 'अनी' किसी को चुभेगी नहीं, इसकी सावधानी रखो ।

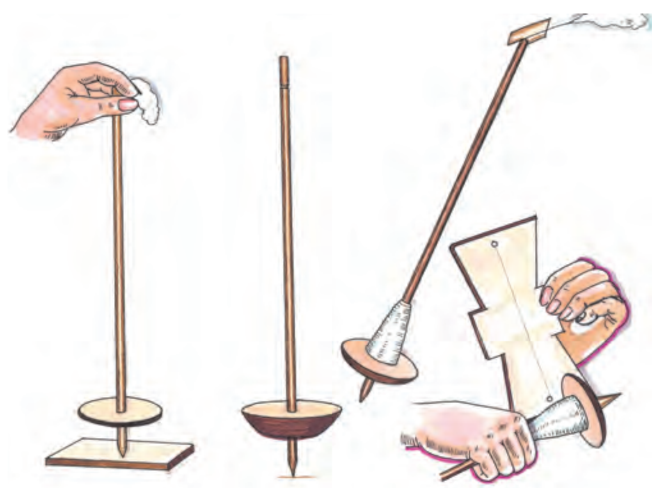

**मुझे घुमाकर भी देखो ।**

सूत कैसे कातना है; इसे हम अगले वर्ष अर्थात चौथी कक्षा में सीखेंगे ।

## मेरी कृति

याद करो

(१) गर्र-गर्र घूमे तकली
मजा देखें चलो चलकर ।
घूम-घूमकर सूत कातती
पूनी संग फटाफट ।।

(२) लंबी मोटी गोल तीली और गत्ते की सहायता से तकली की प्रतिकृति तैयार करो ।

- प्रत्यक्ष तकली अथवा तकली का चित्र दिखाकर निरीक्षण करने के लिए कहें ।
- सूतकताई के विषय में जानकारी बताएँ ।

## २.२ प्राथमिक सिलाई कार्य

**सुई में धागा पिरोना ।**

एक खेल खेलेंगे,

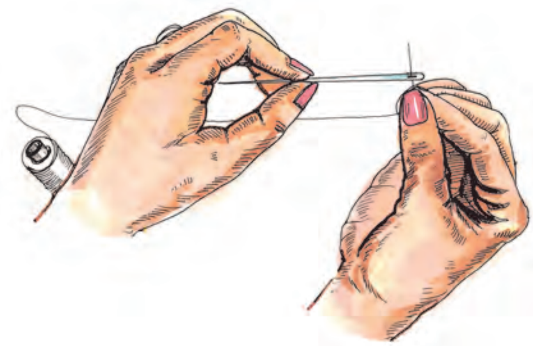

**खेल खेलने से क्या होता है?**

१. आँखों की ज्योति बढ़ती है ।

२. आँखों और हाथों का समन्वय साधा जाता है ।

३. आसानी से सिलने का काम कर सकते हैं ।

४. एक-दूसरे की सहायता से काम किया जा सकता है ।

**खेल खेलते समय निम्न सावधानी रखो ।**

१. एक-दूसरे को सुई नहीं चुभोनी है ।

२. खेल समाप्त होने के बाद धागा पिरोई हुई सुइयाँ (डिब्बी में अथवा कागज में खोंसकर) व्यवस्थित रखो ।

### मेरी कृति

१. दिन में एक बार सुई में धागा पिरोकर देखो ।

२. सिलाई का काम करनेवाले व्यक्ति/दरजी से कपड़ों के नमूने इकट्ठे करो और उन्हें चिपक कॉपी में चिपकाओ ।

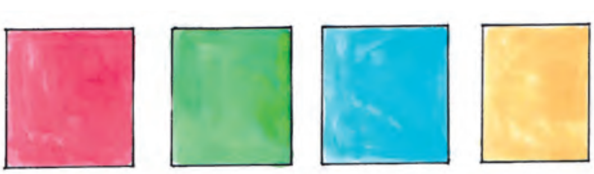

◆ सिलाई करने के संबंध में जानकारी ।

## २.३ गुड़िया काम

**तुम्हें मुखौटे पहनना अच्छा लगता है न !**

किसी के जन्मदिन अथवा होली, रंगपंचमी के अवसर पर तुम मुखौटे लगाकर धमाल मचाते हो । ये मुखवटे बाजार में बिकते हैं । अब हम मुखौटे बनाना सीखेंगे ।

**सामग्री :** बड़े आकार की (तुम्हारे सिर के आकार की) पेपर डिश, मोटी सुई, मोटा धागा, कैंची, लाल और काला स्केच पेन, गोंद, सफेद और पीले रंग का सादा कागज, पशु-पक्षी, फल-फूल आदि के चित्र ।

**ऐसे करो :**

१. पेपर डिश के बाहरी हिस्से पर लाल और काले रंग के स्केच पेन का उचित उपयोग करते हुए आँखे, नाक, कान, होंठ आदि को रँग दो ।

२. पशु-पक्षी, फल-फूल आदि चित्रों का अपनी पसंद के अनुसार रेखांकन करो । प्रत्येक चित्र में आँखों के आकार को काट लो ।

३. पेपर डिश के दोनों ओर कानों के पास छेद बनाओ । उसमें धागा पिरो दो ।

४. यह धागा उतना लंबा होना चाहिए; जिससे सिर के पीछे तक पहुँच सके और उसमें गाँठ लगाई जा सके ।

५. अब मुखौटे को चेहरे पर लगाकर सिर के पीछे गाँठ लगा दो ।

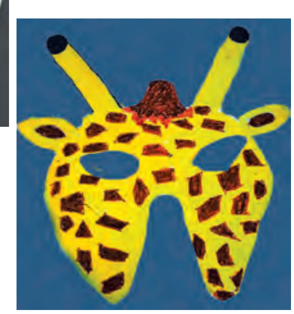

### मेरी कृति

विभिन्न आकार के मुखौटे तैयार करो ।

- प्रत्यक्ष एक मुखौटा तैयार कर अथवा मुखौटे का चित्र दिखाकर विद्‌यार्थियों से मुखौटे तैयार करने के लिए कहें ।
- इस पृष्ठ पर दिए हुए चित्र भी विद्‌यार्थियों ने प्रत्यक्ष में बनाए हैं ।

## २.४ नारियल की रस्सी का बुनाई कार्य

**नारियल रस्सी अथवा नारियल से तैयार की गईं वस्तुओं के नाम और उनके उपयोग बताओ ।**

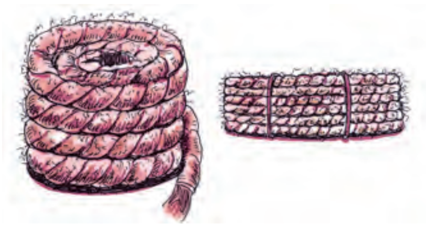

चित्र में तुम्हें क्या दिखाई देता है ?

..............................................

..............................................

..............................................

उपयोग ..............................................

..............................................

..............................................

..............................................

चित्र में तुम्हें क्या दिखाई देता है ?

..............................................

..............................................

..............................................

उपयोग ..............................................

..............................................

..............................................

..............................................

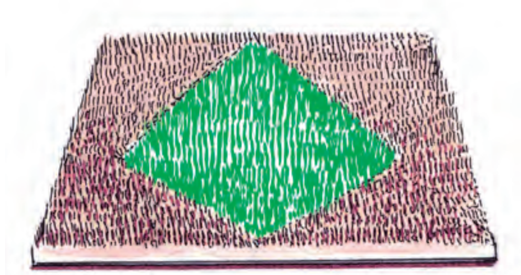

चित्र में तुम्हें क्या दिखाई देता है ?

..............................................

..............................................

..............................................

उपयोग ..............................................

..............................................

..............................................

..............................................

चित्र में तुम्हें क्या दिखाई देता है ?

..............................................

..............................................

..............................................

उपयोग ..............................................

..............................................

..............................................

..............................................

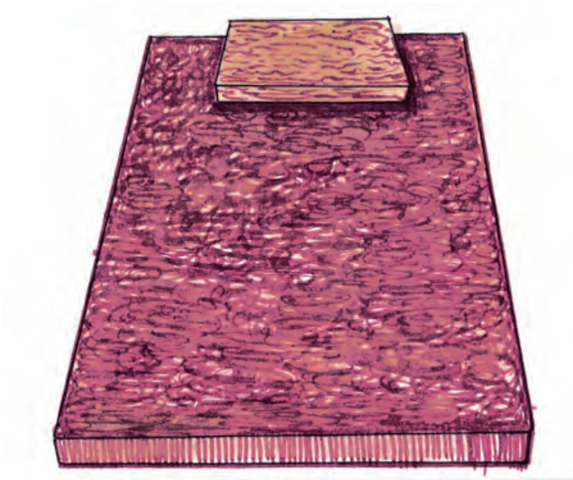

चित्र में तुम्हें क्या दिखाई देता है?

..............................................

..............................................

..............................................

उपयोग ......................................

..............................................

..............................................

..............................................

चित्र में तुम्हें क्या दिखाई देता है?

..............................................

..............................................

..............................................

उपयोग ......................................

..............................................

..............................................

..............................................

## मेरी कृति

(१) चित्र में दिखाए अनुसार वस्तुओं के उपयोग लिखो ।

(२) नारियल की रस्सी से बनाई हुई घर की किसी एक वस्तु का चित्र बनाओ ।

- अपने पास की वस्तुएँ प्रत्यक्ष में दिखाएँ । संभव हो तो नारियल के रस्सी केंद्र में जाने की योजना बनाएँ ।

# ३. क्षेत्र : आवास

## ३.१ मिट्टी कार्य

मिट्टी से फल, सब्जियाँ आदि के आकार बनाना ।

मिट्टी, पानी, लकड़ी का पीढ़ा, नुकीली वस्तु, तसला, कपड़ा, झाड़ू आदि ।

**कृति :**

**१. अमरूद :**

- अमरूद का निरीक्षण करो । मिट्टी का गोला लो ।
- उसे लंबोतरा आकार दो ।
- डंठल की ओर हल्का-सा गहरा आकार बनाओ । किसी तीली को डंठल बनाकर निचले हिस्से में खोंस दो । अब हाथ गीले कर गीले हाथों से गोले को अमरूद का व्यवस्थित आकार दो ।

**२. सेब :**

- सेब का निरीक्षण करो । मिट्टी के गोले को गोल बनाओ ।
- दोनों सिरों को थोड़ा सा दबाओ जिससे सिरे हल्के से गहरे हो जाएँगे । तीली या डंठल बनाकर उसे खोंस दो ।

**३. लौकी :**

- लौकी का निरीक्षण करो । लंबोतरा आकार बनाओ । उसे लौकी का आकार दो । उसमें डंठल लगाओ ।

### मेरी कृति

**फलों और सब्जियों का निरीक्षण करो और उसके अनुसार फलों और सब्जियों के आकार बनाओ ।**

◆ अपने पास की वस्तुएँ प्रत्यक्ष में बनाएँ । मिट्टी कार्य की बारीकियाँ समझाकर बताएँ । संभव हो तो उन स्थानों की सैर का आयोजन करें ।

## ३.२ बाँस और बेंत कार्य

बाँस की तीलियों और टहनियों से विभिन्न आकार बनाना ।

**सामग्री और साधन :** बाँस की एक ही नाप की तीलियाँ (जैसे : १५ सेंमी और १० सेंमी), पक्का धागा

**कृति :**

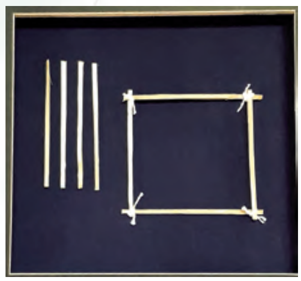

१. बाँस की एक ही नाप की चार तीलियाँ लीं ।
२. उनके सिरे आकृति में जैसा दिखाया गया है; उस तरह एक-दूसरे पर रखीं ।
३. उन सिरों को धागे से पक्का बाँध दिया ।

**कौन-सा आकार बना, बताओ तो सही ।**

---

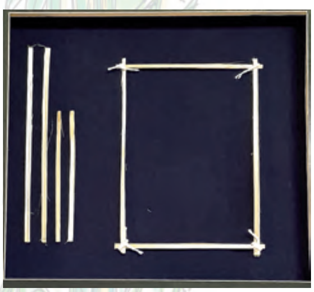

१. बाँस की एक जैसी नाप की दो तीलियाँ लीं ।
२. अब दूसरी समान नाप की दो तीलियाँ लीं ।
३. आकृति में दिखाए अनुसार उन तीलियों को एक-दूसरे पर रखकर धागे से पक्का बाँध दिया ।

**कौन-सा आकार बना, बताओ तो सही ।**

---

१. समान नाप की तीन तीलियाँ लीं ।
२. उनके सिरे आकृति में दिखाए अनुसार एक-दूसरे पर रखीं ।
३. उन सिरों को धागे से पक्का बाँध दिया ।

**कौन-सा आकार बना, बताओ तो सही ।**

---

### मेरी कृति

बाँस की विभिन्न नापों की तालियों से विविध आकार तैयार करो ।

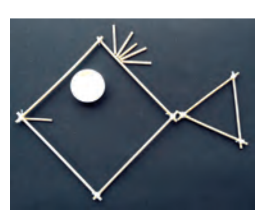

◆ विद्‌यार्थियों की आयु को ध्यान में रखते हुए धारदार हथियारों का उपयोग करने से बचें । आवश्यकता के अनुसार मार्गदर्शन करें ।

## ३.३ फूलों और शोभायमान पेड़ों को लगाना

गजरे, मालाएँ आदि बनाने के लिए किन फूलों और कलियों का उपयोग किया जाता है; इसकी जानकारी प्राप्त करना ।

**गजरे :** छोटे आकार के फूलों और उनकी कलियों को सुई धागे में पिरोकर अथवा गूँफकर ६ इंच से १२ इंच लंबे भरी-भरी मालाओं को ही गजरे कहते हैं । इन गजरों को स्त्रियाँ और युवतियाँ अपने बालों में सजाती हैं ।

बेला (मोगरा), मालती, जूही, लाल कटसरैया, बकुल (मौलश्री) चमेली, रजनीगंधा आदि फूलों का उपयोग गजरे बनाने के लिए किया जाता है । मोगरा, मालती, जूही और चमेली जैसे फूलों की कलियों का खिलना प्रारंभ होते ही उन्हें डंठलसमेत तोड़कर पानी में रखा जाता है । इससे इन फूलों के गजरे बहुत समय तक ताजा रहते हैं और जल्दी कुम्हलाते नहीं हैं ।

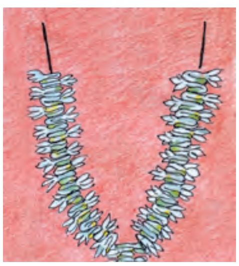

**मालाएँ :** बड़े आकारवाले, गाढ़ी पंखुडियोंवाले फूलों और आम, अशोक, तगर आदि के पत्तों को कलात्मक ढंग से पिरोकर लंबी मालाएँ बनाई जाती है । उनका उपयोग धार्मिक विधियों, स्वागत तथा बिदाई समारोह, प्रतिमाओं, विवाह समारोह जैसे अवसरों पर किया जाता है । माला बनाने के लिए गेंदा, गुलदाउदी (सेवंती), रजनीगंधा, मोकारा, एँस्टर, तगर, लाल कटसरैया जैसे फूलों का उपयोग किया जाता है । ये मालाएँ मोटी और लंबी होती हैं ।

**पुष्पगुच्छ/गुलदस्ता :** मालाएँ बनाने के लिए जो फूल उपयोग में लाए जाते हैं; उनमें से कुछ फूल-पुष्पगुच्छ बनाने के लिए उपयोग में लाए जाते हैं । उन्हीं फूलों को कलात्मक बनाकर विविध समारोहों और अवसरों पर उपयोग में लाया जाता है ।

**मेरी कृति**

१. फूलों की दुकान में जाकर गजरे, मालाएँ, तोरण का निरीक्षण करो ।
२. फूलों की छोटी मालाएँ बनाओ ।

# अन्य क्षेत्र :

## पशु-पक्षी संवर्धन

**घटक :** मनुष्य के लिए गाय, भैंस, बकरी और मुरगी उपयोगी होती हैं; इसका अध्ययन करना ।

**पात्र :** गाय, भैंस, बकरी और मुरगी के मुखौटे लगाएँ हुए विद्‌यार्थी

**रंगमंच :** कक्षा के बीच का स्थान

### संवाद

मुरगी दाने चुग रही है । (मुरगी की भूमिका करने वाली लड़की अभिनय करती है ।

**गाय (प्रवेश कर) :** कहो मुरगी दीदी ! आँगन को कुरेद लिया ?

**मुरगी :** अरे बहना ! तुम इतनी जल्दी कैसे आ गई ? और वह चरवाहा कहाँ गया ?

**गाय :** अरी, आज बड़ी मजे की बात हुई । हमारे मालिक-मालकिन सुबह ही पड़ोस के गाँव गए हैं । वे शाम तक तो आने से रहे । फिर हमने चरवाहे से कहा, 'अरे भाई ! आज तू भी आराम कर ले । फिर क्या... वह तो तुरंत रफू-चक्कर हो गया और हम आ गईं घर!

**मुरगी :** अच्छा! लेकिन क्या तुम जानती हो कि मालिक और मालकिन पड़ोस के गाँव में क्यों गए हैं । हमने जो अंडे दिए हैं; वे बाजार में जाकर बेचेंगे और बहुत-से रुपये लाएँगे ।

**गाय :** बड़ी अकड़ मत दिखा । हम भी बहुत उपयोगी हैं उनके लिए । हमारा दूध बेचकर उन्हें बहुत-से रुपये मिलते हैं । इसके सिवा दही, मक्खन, घी, खोवा, पनीर से मालिक को बड़ी अच्छी आमदनी होती है ।

**भैंस (प्रवेश करती है) :** अरी... ओ बातूनी दीदी । बेकार डींगें मत हाँक । तुमसे ज्यादा दूध तो हम ही देती हैं । वह जल्दी फटता भी नहीं । हमारे दूध से बहुत सारे पदार्थ तैयार किए जाते हैं । उन पदार्थों की बड़ी माँग रहती है । (तभी बकरियाँ कूदती हुई आती हैं)

मुरगी : आ गई क्या... घूम-घामकर बकरी बहना ! क्यों.. री, कहाँ गई थी मटरगश्ती करने ?

बकरी : अरी मुरगी बहना ! तुम्हारी तरह हम कुछ आँगन कुरेदती नहीं रहतीं । हम अपना चारा स्वयं ही ढूँढ़कर खाती हैं । इसके लिए पैसे खर्च नहीं करने पड़ते । लेकिन हम लोगों के बहुत काम आती हैं । दूध, मांस, लेंडी के साथ-साथ हमारा अंग-अंग मनुष्य के काम आता है । हम बहुत-सी आय प्राप्त करा देती हैं ।

गाय : हाँ... यह तो सही है । लेकिन खेती के लिए बैल और दूध के लिए बछिया (कलोर) हम ही देती हैं न!

भैंस : देखो बहनो! तुम कितनी ही बकझक कर लो । हमारे दूध की बराबरी कोई नहीं कर सकता । (यहाँ-वहाँ देखती है ।) अरी माँ! यह मुरगी कहाँ गई ? अब घूरे को खुरच रही होगी ।

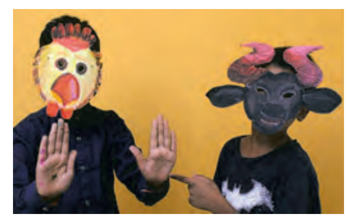

मुरगी : (आती है ।) यहीं तो थी मैं । आसमान में चील को उड़ते देखा । वह मेरे चूजों को उड़ा ले जाती है । इसलिए मेरे चूजों को दड़बे में जाने के लिए कह आई हूँ । लेकिन हाँ... तुम्हारी बातें सुन ली मैंने ! हमारे कहने का मतलब यह है कि हम सभी मनुष्य के लिए बहुत उपयोगी है और उसे पैसा भी प्राप्त कराते हैं । फिर आपस में झगड़ा किस बात का ?

भैंस : सच है बहना ! यह मुरगी दीखती है छोटी लेकिन बातें करने में तेज है । अब शाम हो गई है, मालिक-मालकिन आते ही होंगे । चलो ! चलते हैं गोठ में... अपनी-अपनी जगह पर ।

(सभी जाती है ।)

## मेरी कृति

**१. इस बातचीत को कक्षा अथवा विद्यालय के समारोह में प्रस्तुत करो ।**

**२. गाय, भैंस, बकरी और मुरगी के चित्रों का संग्रह बनाओ ।**

- पालतू पशुओं और उनके उपयोगों को समझाकर बताएँ । किसी गोठ में जाने का आयोजन करें ।
- उपरोक्त संवाद नमूने के रूप में दिया गया है । उसमें आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन किया जा सकता है ।

# सूचना एवं तकनीकी विज्ञान

## संगणक को सुरक्षित रूप से चलाना और सुरक्षित रूप से बंद करना ।

संगणक बिजली पर चलने वाला एक यंत्र है । अलग-अलग प्रकार के संगणक होते हैं । इसलिए उन्हें चलाने और बंद करने की प्रणाली में अंतर होता है । उसे समझ लेना चाहिए । उसे समझ लेने के लिए नमूने के रूप में निम्न चरण दिए हैं ।

१. संगणक चलाने से पहले उसके सभी जोड़ो (कनेक्शन) (जैसे डेटा और पॉवर सप्लाई वायरों) की जाँच करो ।

२. संगणक को बिजली की आपूर्ति करने वाले मुख्य स्विच को शुरू करो । सी. पी. यू. के ऊपर लगे पॉवर (ON/OFF) का बटन दबाओ ।

३. मॉनिटर के पॉवर की बत्ती जल रही है अथवा नहीं; यह देखो । यदि बत्ती जल नहीं रही है तो बत्ती जलाओ ।

४. बूटिंग की क्रिया चल रही है तो स्क्रीन पर कौन-से परिवर्तन दिखाई देते हैं; यह देखो । प्रारंभ का डेस्कटॉप स्क्रीन पर दिखाई देने तक रुको ।

## सड़क सुरक्षा :

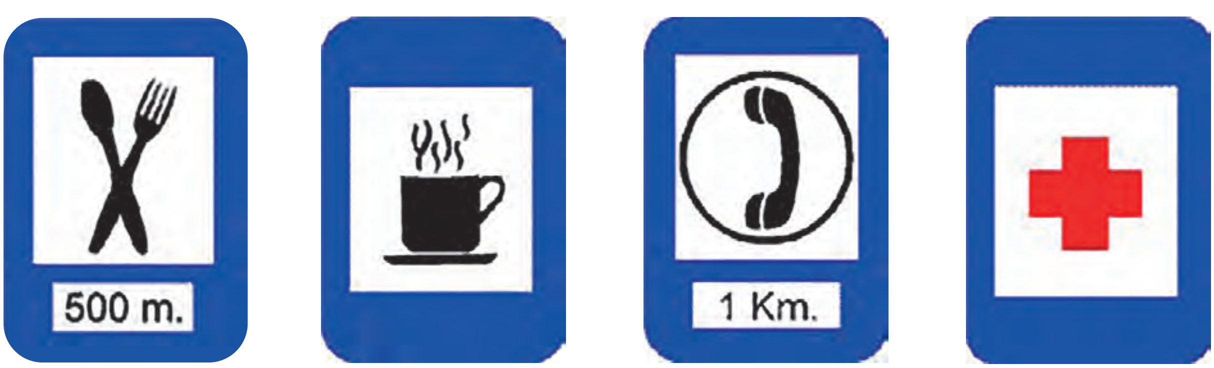


## मेरी कृति

**रंगों की सहायता से यातायात के संकेत बनाओ और अपने मित्रों को उनका अर्थ बताओ ।**

- विद्यार्थियों के समूह/गुट करें । विद्यार्थियों को संगणक सुरक्षित रूप से चलाने और बंद करने के चरण समझा दें और उससे उसका प्रत्यक्षीकरण करवाएँ । निरीक्षण करने के लिए भी कहें ।
- उदा. के रूप में कुछ संकेत दिए गए हैं । संकेतों की तालिका बनवाकर कक्षा में लगवाएँ । संकेतों को समझाकर बताएँ ।